तित्थयर

वर्ष २२ अंक-२ मई १९९८

जैन भवन

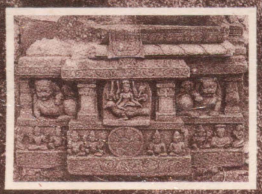

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - २, मई १९९८

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar**, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US $ 20.00,
for three years : 160.00, US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007 and Printed by her
at Surana Printing Works, 205 Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007, Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	गणधर : जिन तो नहीं, जिन-सदृश	साध्वी संप्रज्ञाजी	५
२.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	१५
३.	राजा सम्प्रति		२३

Composed by
COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra-712248, Hooghly.

संवादपत्र रजिस्टेशन (केन्द्रीय) विधि (१९५३) के ८ नम्बर धारा के अनुसार निवृति :

प्रकाशन स्थान :		कलकत्ता
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	लता बोथरा (भारतीय)
ठिकाना	:	पी. २५, कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता - ७
प्रकाशक का नाम	:	लता बोथरा (भारतीय)
ठिकाना	:	पी. २५, कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता - ७
सम्पादक का नाम	:	लता बोथरा (भारतीय)
ठिकाना	:	पी. २५, कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता - ७
सत्वाधिकारी का नाम	:	जैन भवन
ठिकाना	:	पी. २५, कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता - ७

मैं, लता बोथरा, घोषणा करती हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे ज्ञान एवं विश्वासानुसार सत्य है ।

लता बोथरा

१५.५.१९९८

गणधर : जिन तो नहीं, जिन-सदृश

-साध्वी संप्रज्ञाजी
एम. ए. साहित्य रत्न

पृष्ठभूमि

अहिंसा प्रधान एवं जनहित प्रेरक धर्म के रूप में जैन धर्म की अपनी विशिष्ठ महत्ता रही है। जैन संस्कृति सदैव जनहित की भावना से अनुप्राणित रही है। जैन धर्म के प्रवर्तकों ने जाति-वर्ग-देश आदि से परे रहकर जन-जन को सम्यक्-ज्ञान-दर्शन-चरित्र का धर्मोपदेश देकर मोक्ष-प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त किया हैं। वर्तमान शासनपति भगवान् महावीर का अनंत उपकार है कि उन्होंने भी धर्मदेशना देकर भव्य-जीवों को मुक्ति पथ की ओर अग्रसर किया। वर्तमान में जो उनकी वाणी है वह 'आगमों' में निबद्ध है। तीर्थंकरों के साथ-साथ गणधरों का भी अमिट उपकार है हम पर। आज जितने भी सूत्र उपलब्ध हैं वे गणधरों की ही देन हैं। वस्तुतः गणधर ही भगवान् की वाणी को सूत्र-रूप प्रदान करते हैं।

भगवान् ऋषभदेव से भगवान् महावीर तक के चतुर्विंशति तीर्थंकरों की गणधर-परम्परा का आगमों में स्पष्टतः उल्लेख है। इन चतुर्विंशति तीर्थंकरों के गणधरों की संख्या चौदह सौ बावन है।[1] भगवान् ऋषभदेव के ९४ गणधर हुए तथा भगवान् महावीर के ११ गणधर हुए। चौथे तीर्थंकर अभिनन्दन जिन के सर्वाधिक गणधर ११६ हुए। सबसे कम गणधर पार्श्वनाथ के हुए जिनकी संख्या मात्र १० है। भगवान् महावीर के गणधर तो ग्यारह है किंतु गण नव ही हुए।

तीर्थंकरों से गणधरों को पृथक् रूप से नहीं देखा जा सकता है। धर्म-परम्परा के साथ, धर्म-प्रवर्तन के साथ तथा शासन की बागडोर सम्भालने के लिए गणधरों की महती आवश्यकता होती है। तीर्थंकरों की भाँति गणधर भी अनंत हुए हैं। या यों भी कहा जा सकता है तीर्थंकरों से भी गणधरों की संख्या कई गुना अनंत है। अनादिकाल में चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखलाएँ

अनंत बार हो चुकी है । वर्तमान में २४ तीर्थंकर हुए हैं, भविष्य में भी होंगे । ..... और गणधर भी अनन्तानन्त ! ..... वर्तमान गणधरों की संख्या को लेकर दिगंबर-श्वेताम्बर परम्परा में कोई मतभेद नही है । कथावस्तु में भले ही अंतर हो किंतु नाम एवं गणना में कोई भेद नहीं है ।

गण एवं गणधर

'गण' एवं 'धर' शब्दों से विनिर्मित शब्द है- 'गणधर' ! गण की व्याख्या इस प्रकार की गई है- जैनों के कुल समूह को गण कहा जाता है ।[2] जो धर्म-गण को धारण करता है वह गणधर है ।[3] कतिपय आचार्य गणधर की व्याख्या इस प्रकार भी करते हैं- 'जो तीर्थंकरों के द्वारा अनुज्ञात गण को धारण करते हैं, वे गणधर हैं ।[4] गण को धारण करने के कारण इन्हें गणधारी अथवा 'गणधारिन्' भी कहा गया है ।[5]

तीर्थंकर के पश्चात् 'गणधर-पद' का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है । यह पद तीर्थंकरों द्वारा योग्य श्रमणों/शिष्यों को प्रदान किया जाता है । अभिधान राजेन्द्र कोष के अनुसार ये गणधर अनुत्तर ज्ञान-दर्शनादि विशिष्ट गुणों के धारक होते हैं ।[6] समस्त साधु-समुदाय गणधरों के संरक्षण में ही अध्ययन करते हैं । इन अध्ययनकर्ताओं का समूह गण और गण का प्रमुख 'गणधर' होता है ।

यहाँ यह भी बताना प्रसंगोचित होगा कि गण के प्रमुख तो गणधर थे ही किंतु इनके अतिरिक्त गण में और क्या-क्या पद सृजित थे ?

गणिम- जिसके द्वारा गणना की जाती है या जिसकी गणना की जाती है वह गणिम है ।[7]

गणार्थकर- जो गण के अर्थ अर्थात् प्रयोजनों को पूर्ण करता है, वह गणार्थकर है ।[8]

गणशोभि- जो गण को वाद निपुणता से सुशोभित करता है वह गणशोभि/गणशोभिन् है ।[9] कल्पसूत्र में संभवतः इन्हें ही 'वादी' कहा गया है ।

गणशोधिक- जो गण की शुद्धि करता है, वह गणशोधिकर है ।[10]

उपर्युक्त सभी पद गण से ही सम्बद्ध है । कालांतर में गण में 'गणि'

पद भी सृजित हुआ किंतु उसकी व्याख्या टीकाकारों ने कहीं भी नहीं की है। वामन शिवराम आप्टे ने अपने 'संस्कृत हिन्दी कोष' में 'गणि' शब्द का अर्थ 'गिनना' किया है। इससे यही प्रतिभासित होता है कि 'गणिम' और 'गणि' शब्द में कोई अर्थान्तर नहीं है। गण से 'गणधिपति' पद भी सृजित हुआ है। गण की रीति-नीति तथा व्यवस्थादि के नियमों को 'गण समाचारी' कहा गया है।[11]

गणधर - पद - क्रम

जैन-परम्परा में 'गणधर' शब्द एक पारिभाषिक शब्द है। यह अत्यन्त विशेष अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। भगवान् महावीर के धर्मशासन में जो पद हैं या जिन्हें गुणी व्यवस्थापक माना गया है उनमें 'गणधर' का पद-क्रम द्वितीय है। यथा-तीर्थंकर, गणधर, आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, गणिम एवं गणावच्छेदक।

'तीर्थंकर' 'गणधर' से संपृक्त है। जो सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र युक्त तीर्थ की तथा श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका चतुर्विध संघ की स्थापना करते हैं, वे तो तीर्थंकर हैं ही किंतु आवश्यक चुर्णिकार का यह कथन कितना सटीक है कि जो तीर्थ/गणधरों को तैयार करते हैं, वे तीर्थंकर हैं।[12] गणधर भाव तीर्थ है अतः तीर्थंकरों के लिए यह उचित ही कहा गया है कि वे भाव तीर्थ का प्रकाशन करते हैं।[13]

आचार्य वे हैं जो स्वयं ज्ञानादि आचार का पालन करते हैं, दूसरों से करवाते हैं और आचार की प्ररूपणा करते हैं।[14] आचार्य सूत्र-अर्थ के व्याख्याता भी होते हैं।[15] जिनकी उपाधि/सान्निध्य से श्रुत का आय/लाभ होता है वे उपाध्याय हैं।[16] जो साधुओं को प्रशस्त योगों (तप-संयम) में प्रवृत करता है वह प्रवर्तक है।[17] जो चारित्र-भ्रष्ट साधकों को गण से पृथक् करने का आदेश देता है या चारित्र-शुद्धि हेतु उचित प्रायश्चित प्रदान करता है, वह गणावच्छेदक है।

जिन-सदृश गणधर

गणधरों को जिन तो नहीं किंतु जिन-सदृश अवश्य माना है। क्यों कि गणधर अतुल ज्ञानराशि के धनी, चौदह पूर्वों के ज्ञाता एवं अनेक लब्धियों

के धारक होते हैं। ..... भगवान् महावीर रूपी हिमालय से निसृत जिनवाणी-गंगा गौतम गणधर के श्रुति-कुण्ड में प्रविष्ट हुई है। अर्थात् ज्ञान-गंगा के धारक गौतम गणधर ही थे। यथा-

"वीर हिमाचल ते निकसी गुरू गौतम के श्रुति-कुण्ड ढरी है।
मोह महाचल भेद चली जग की जड़ता सब दूर करी है॥
ज्ञान पयोदधि माही रली, बहु भंग-तरंगन सों उछरी है।
ता शुचि शारद गंग नदी प्रति में अंजुरी निज शीशा ढरी है॥"

स्वामी 'सुधर्मा' की स्तुति में उन्हें जिन-सदृश बताया गया है-

"चौदह पूरव धार कहिए ज्ञान चार बखाणिए।
जिन नहीं पण जिन सरीखा, एहवा श्री सुधर्मा स्वामी जाणिए॥

गणधर चार ज्ञान के धारक होते हैं। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान अंततः चार घनघाति कर्मों के क्षय हो जाने पर उन्हें पंचम ज्ञान-केवलज्ञान की भी सम्प्राप्ति हो जाती है।

भगवान् महावीर के गणधर

भगवान् महावीर के धर्म-शासन-व्यवस्था में प्रभु के अतिरिक्त उनकी शिष्य-परम्परा में गणधरों का अपना अतिविशिष्ट स्थान था। जिन प्रभु महावीर की द्वादशांग वाणी के चतुर्थ अंग 'समवायांग' में ग्यारह गणधरों की चर्चा आयी है। मूलतः गणधर ग्यारह थे और गण नव थे। दो गणधरों की समान वाचना होने के कारण गण नव रहे। किंतु, कुल गणधर ग्यारह रहे।[18]

समवायांग सूत्र में गणधरों का विस्तृत विवरण नहीं मिलता है किंतु इन गणधरों के नाम इस प्रकार अंकित है - इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायूभूति, व्यक्त, सुधर्मा, मंडिक (त), मौर्यपुत्र, अकम्पित, अचलभ्राता, मेतार्य और प्रभास।

कल्पसूत्र में गणधरों के नाम, आयु, शिष्य संख्या, माता-पिता, जाति, गोत्र, जन्मस्थान निर्वाण समय और निर्वाण भूमि का विवरण मिलता है। किंतु, इनमें से अधिकांश की उपलब्धियों की जानकारी नहीं मिल पाती है। एक प्रमुख तथ्य यह है कि ग्यारहों गणधर की निर्वाण भूमि-राजगृह

थी । भद्रबाहु कृत कल्पसूत्र में यद्यपि भगवान् महावीर की जीवनी का विस्तृत विवरण उपलब्ध है । किंतु, गणधरों की चर्चा नहीं है । कल्पसूत्र की टीकाओं विशेषकर "कल्पलता" में गणधरों का प्रसंग आया है । कल्पसूत्र के तीन विभाग- १. जिन चरित्र २. समाचारी और ३. स्थविरावलि । स्थविरावली में भगवान् महावीर के नौ गण और ग्यारह गणधरों का उल्लेख आया है ।[19] वर्णनानुसार ये सभी गणधर द्वादशांगी तथा चौदह पूर्व के धारक थे । ये गणधर राजगृह के अतिरिक्त अन्य स्थलों के भी थे ।

एकादश गणधरों में इन्द्रभूति तथा सुधर्मा के अतिरिक्त अन्य सभी ने भगवान् महावीर के जीवन काल में ही मोक्ष प्राप्त किया था । प्रथम गणधर तथा पंचम गणधर ने इस समय तक मुक्ति प्राप्त नहीं की थी । वर्तमान में जो श्रमण संघ है वह आर्य सुधर्मा की परम्परा में है शेष गणधरों की आचार्य परम्परा विच्छिन्न है ।[20] पंचम गणधर आर्य सुधर्मा के शिष्य आर्य जम्बू स्वामी थे जो राजगृह के ऋषभदत्त के पुत्र थे । जम्बू स्वामी ने अपने आचार्य सुधर्मा से चम्पानगरी में शास्त्रों की वाचना भी की थी ।

जम्बू स्वामी के बाद प्रभव, स्वयंभव, यशोभद्र, संभूति और विजय आदि पाँच चतुर्दश पूर्वधर हुए । इनका उल्लेख कल्पसूत्र में उपलब्ध है । अंतिम चतुर्दश पूर्वधारी छेद-सूत्रकार आचार्य भद्रबाहु हुए ।

"कल्पसूत्र" की वाचना में आये विवरण के अनुरूप ग्यारह गणधरों में इन्द्रभूति गौतम भगवान् के प्रधान गणधर थे । इन्द्रभूति, अग्निभूति और वायुभूति प्रथम तीन गणधरों का अपना विशिष्ट महत्त्व था । ये तीनों सगे भाई थे । इनके पिता का नाम वसुभूति था । ये ब्राह्मण थे । आश्चर्य यह है कि सभी गणधर ब्राह्मण ही थे । ये सभी अध्यापक थे । इनकी निर्वाण भूमि राजगृह थी ।

कल्पसूत्र के अनूसार जिस रात्रि को भगवान् महावीर को निर्वाण प्राप्त हुआ । फलतः इन्द्रभूति गणधर का महावीर के प्रति स्नेहपूर्ण मोह भंग हुआ और उन्हें उसी रात्रि को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई ।[21] आगमों में उल्लेख है कि भगवान् महावीर के चौदह हजार शिष्य थे । वे भगवान् के अत्यंत प्रिय थे । इन्द्रभूति गौतम के हृदय में भी प्रभु के प्रति असीम अनुराग और भक्ति थी । इस तथ्य की पुष्टि भगवती सूत्र के एक संवाद से होती है ।[22]

भगवान् ने गौतम से कहा था – "हे गौतम ! तुम मेरे साथ बहुत समय से स्नेहबद्ध हो । तुमने बहुत समय से मेरी प्रशंसा की है और गौरव गान किया हैं। हे गौतम ! हम दोनों का परिचय दीर्घकालीन है । तूने दीर्घकाल से मेरी सेवा की है मेरा अनुसरण किया है और मेरे साथ अनुकूल व्यवहार किया है । हे गौतम ! मरणोत्तर काल में शरीर का विनाश हो जाने पर यहॉ से चलकर हम दोनों समान एकार्थ हो जायेंगे ।"[23]

एक बार गौतम स्वामी वाणिज्य ग्राम में गोचरी (भिक्षा) लाने के लिए पधारे थे । वहॉ उन्होंने श्रावकों से सुना कि भगवान् महावीर के दश प्रमुख श्रावकों में आनन्द श्रावक को कुछ मर्यादा में अवधिज्ञान की प्राप्ति हुई है । यह जानकर गौतम स्वामी ने आनन्द श्रावक से कहा – "आनन्द ! गृहस्थ को अवधिज्ञान हो सकता । किंतु इतना विशाल और स्पष्ट नहीं होता है ।

अतः हे आनन्द ! तुम अपने इस कथन की आलोचना करो और प्रायश्चित लो ।[24] आनन्द श्रावक ने विनम्र भाव से गौतम गणधर से कहा – "भन्ते ! आलोचना मुझे नही अपितु आपको ही करनी है । भगवान् के समीप जाकर जब गौतम गणधर ने इस प्रसंग की चर्चा की तब भगवान् ने गौतम से कहा कि जो कुछ आनन्द श्रावक ने कहा है वही तथ्य है, अतः तुम्हे आनन्द से क्षमायाचना करनी चाहिए ।[25]

आगमों में जिस प्रकार गौतम का भगवान् महावीर के साथ संवादों का उल्लेख है, उसी प्रकार उनके अन्य स्थविरों के साथ हुए संवाद भी उपलब्ध होते हैं । जैसा कि 'उत्तराध्ययन सूत्र' के २३वें अध्ययन में से केशी-गौतम का संवाद लिया जा सकता है ।[26] उसमें गौतम गणधर केशी श्रमण को और पार्श्वनाथ के शासन भेद को उनके शिष्यों सहित महावीर के शासन में दीक्षित करते हैं ।

आगमों में आए एक अन्य प्रसंग में भगवान् महावीर द्वारा अपने प्रमुख शिष्य इन्द्रभूति को अपना संदेश वाहक बनाकर महाशतक श्रावक के पास भेजने का वर्णन आया है । महाशतक की मारणान्तिक संलेखना के समय भगवान् से प्रायश्चित करने की प्रेरणा लेकर वे महाशतक के पास जाते हैं और कहते हैं कि हे महाशतक ! तुमने अपनी पत्नी रेवती को जो सत्य

होते हुए कटु, कठोर एवं पुरूष वचन कहे हैं उनका प्रायश्यित करना तुम्हारे लिए आवश्यक है ।[27]

आगमों में विशेषतः "भगवती सूत्र" में इन्द्रभूति गौतम के गुण का वर्णन हुआ है, "गौतम सुवर्ण रेखा के समान और पद्मकेशर के समान धवलवर्ण वाले, उग्रतपस्वी, दीप्त तपस्वी, तप्त तपस्वी, महा तपस्वी, उदार एवं अतिशय गुणवाले थे । इन्द्रभूति गौतम अतिशय तप वाले घोर ब्रह्मचर्य के पालक थे । शरीर के संस्कारों का त्याग करने वाले, शरीर में रहने पर संक्षिप्त एवं दूरगामी होने पर तेजो लेश्या वाले थे ।[28] पूर्व के ज्ञाता थे, चार ज्ञान सम्पन्न थे और सर्वाक्षर सन्निपाती थे । आगमों के अध्ययन-मनन एवं चिन्तन से ज्ञात होता है कि इन्द्रभूति गौतम के प्रश्नों के आधार पर ही उन आगमों का संगुफन हुआ है। उनमें औपपातिक सूत्र, राजप्रश्नीय सूत्र, जम्बुदीप प्रज्ञप्ति और सूर्य प्रज्ञप्ति है । भगवती सूत्र का अधिकांश भाग इन्द्रभूति गणधर के प्रश्नों पर आधारित है । गणधर गौतम द्वारा भगवान् महावीर से पूछे गये ३६,००० प्रश्नों का विशालतम खजाना है – भगवती सूत्र । शेष आगमों में भी कहीं-कहीं गौतम का उल्लेख पाया जाता है । लेकिन आर्य सुधर्मा के संबंध में आगमों में कोई विशेष उल्लेख उपलब्ध नहीं होते है । केवल इतना भर ज्ञात होता है कि अपने शिष्य जम्बू के प्रश्न के उत्तर में आर्य सुधर्मा ने आगमों का अर्थ बताया था । यह एक आश्चर्य पूर्ण बात कही जायेंगी, कि सुधर्मा की परम्परा के संघ के विद्यमान होने पर भी और प्रस्तुत आगमों की वाचना एवं परम्परा से सुधर्मा स्वामी द्वारा प्राप्त होने की मान्यता होने पर भी आगमों में आर्य सुधर्मा द्वारा भगवान् से किसी भी प्रश्न को-पूछने का निर्देश नहीं है । हॉ, इन्द्रभूति गौतम के अतिरिक्त अग्निभूति, वायुभूति तथा मण्डित् पुत्र द्वारा पूछे गये कुछ प्रश्नों का उल्लेख भगवती सूत्र में आया है ।[29]

आगमों में इन्द्रभूति गौतम के अतिरिक्त अन्य गणधरों का विशेष उल्लेख या वर्णन उपलब्ध नहीं होता । आगमों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि "सुयं मे आउ सं तेणं भगवया एव मक्खायं" (इस वाक्य से जिन-जिन आगमों का प्रारंभ होता है) उनकी व्याख्या करते हुए आगमों के टीकाकारों ने यह मत प्रकट किया है कि भगवान् के मुख से सुनने वाले आर्य सुधर्मा

अभिप्रेत हैं, और वे अपने प्रिय शिष्य जम्बु को उस श्रुत का अर्थ बताते हैं।[30] उक्त वाक्य से प्रारंभ होने वाले आगमों में आचारांग, स्थानांग, समवायांग, अन्तकृतदशा आदि का निर्देश किया जा सकता है। आर्य सुधर्मा का गुण वर्णन भी इन्द्रभूति गौतम जैसा ही है। भेद केवल इतना है कि उन्हें ज्येष्ठ शिष्य नहीं कहा गया हैं। गणधरवाद का मूल सर्वप्रथम आवश्यक निर्युक्ति की ही एक गाथा में मिलता है। इस गाथा में ग्यारह गणधरों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का क्रमशः उल्लेख इस प्रकार है–

"जीवे, कम्मे, तज्जीव, भूय,
तारिसय, बंधमोक्खे, य।
देवा, णेरइय, या मुण्णे,
परलोय, णिव्वाणे॥"[31]

१. जीव है या नहीं ?
२. कर्म है या नहीं ?
३. शरीर ही जीव है अथवा अन्य ?
४. भूत है या नहीं ?
५. इस भव में जीव जैसा है, परभव में भी वैसा ही होता है या नहीं ?
६. बन्ध-मोक्ष है या नहीं ?
७. देव है अथवा नहीं ?
८. नरक है अथवा नहीं ?
९. पुण्य-पाप है या नहीं ?
१०. परलोक है या नहीं ?
११. निर्वाण है अथवा नहीं ?

आचार्य हेमचन्द्र ने कहा है कि अपना मोक्ष ज्ञात करके भगवान् महावीर ने विचार किया, कि मेरे प्रति प्रगाढ़ राग के कारण गौतम को केवल ज्ञान नहीं होता यह सोचकर भगवान् ने गौतम को एक निकटस्थ ग्राम में देव शर्मा को प्रतिबोध देने के लिए भेज दिया। गौतम के आने से पहले ही भगवान् को निर्वाण प्राप्त हो गया था। गौतम ने पहले विचार किया कि भगवान् ने मुझे अलग क्यों किया ? पर अन्त में विचार आया कि तथा

वीतराग प्रभु में मैंने राग और ममता रखी । मेरी राग और मेरी ममता ही बाधक है इस प्रकार विचार श्रेणी पर चढ़ते-चढ़ते इन्द्रभूति को भी केवलज्ञान हो गया ।[32] इस प्रकार गौतम का वर्णन तो विस्तार से उपलब्ध होता है, लेकिन अन्य गणधरों का अति संक्षिप्त अर्थात् नाम मात्र ही उपलब्ध होता है । कथा ग्रंथों में भी अन्य गणधरों का कोई विशेष उल्लेख उपलब्ध नही होता है ।

१. चौबीसे जिनना, सगला ही गणधार । चौदह सौ ने बावन, ते प्रणमूं सुखकार ॥ – आचार्य जयमलजी कृत साधु वंदना, गाथा-७
२. अभिधान राजेन्द्र कोष, पृष्ठ - ९१५
३. दर्शवैकालिक सूत्र-टीका – पत्र १०
४. आवश्यकचूर्णि १ पृष्ठ - ९६
५. आवश्यक हारिभदीया टीका - १
६. अभिधान राजेन्द्र कोष, पृष्ठ - ९१५
७. अनुयोग द्वार सूत्र, पत्र-३८२
८. स्थानांग टीका, पत्र-१४२
९. व्यवहार सूत्र भाष्य, १० पत्र-८७
१०. स्थानांग सूत्र, टीका, पत्र-२३३
११. अभिधान राजेन्द्र कोष, पृष्ठ-८१५
१२. आवश्यक चूर्णि १, पृष्ठ-८५
१३. विशेषावश्यक भाष्य, पत्र १०४७
१४. भगवती टीका पत्र, ३/४
१५. वही, पत्र-४
१६. वही, पत्र-४
१७. प्रज्ञापना सूत्र, टीका, पत्र-२४
१८. समवायांग सूत्र-११, ७४, ७८, १२
१९. कल्पसूत्र (कल्पलता) पृष्ठ-२१५

२०. वही
२१. कल्पसूत्र कल्पलता-२१५, २१७
२२. भगवती सूत्र-१४/७, पृष्ठ-३५४
२३. वही
२४. उपासकदशांग सूत्र-अध्याय-१ आनन्द श्रावक का प्रसंग
२५. वही
२६. प्रसंग उत्तराध्ययन सूत्र-अध्याय-२३
२७. उपासक दशांग अध्याय-८
२८. भगवती शतक । विद्यापीठ प्रथम भाग पृष्ठ संख्या-३३
२९. भगवती सूत्र ४-५
३०. भगवती सूत्र- ३-१
३१. आव. नि. गाथा-५४६
३२. आचार्य हेमचन्द्रकृत त्रिषष्ठि शलाका पुरूष चरित्र पर्व-१०, सर्ग-१३

श्रावक जीवन

आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी

पूर्वानुवृति

महान् श्रुतधर आचार्यश्री हरिभद्रसूरीश्वरजी ने स्वरचित 'धर्मबिन्दु' ग्रन्थ के तीसरे अध्याय में गृहस्थ जीवन का विशेष धर्म प्रतिपादित किया है। बारह व्रतमय गृहस्थधर्म बताया है ।

गृहस्थावस्था में रहते हुए भी मोक्षमार्ग की आराधना करने की तमन्नावालों के लिये बारह व्रतों को स्वीकार कर, उन व्रतों का पालन करना आवश्यक होता है । इसलिए बारह व्रतों को विस्तार में समझा रहा हूं। आज पांचवा 'परिग्रहपरिमाण व्रत' समझाना है। पहले यह व्रत स्वीकारने का प्रारूप बताता हूं :

'मैं सोने के जेवर (अलंकार).....तोले से ज्यादा नहीं रखूंगा ।'

'मैं चांदी के जेवर.....तोले से ज्यादा नहीं रखूंगा ।'

'मैं रूपये.....से ज्यादा नहीं रखूंगा ।'

'मैं धान्य (अनाज).....मण से ज्यादा नहीं रखूंगा ।'

'मैं खेत, बाड़ी, बगीचा वगैरह....एकड़ जमीन से ज्यादा नहीं रखूंगा ।'

'मैं.....घर, ...दुकान, ...बंगला से ज्यादा नहीं रखुंगा ।'

'मैं.....सोना, चांदी से ज्यादा नहीं रखूंगा ।'

'मैं ताँबा....., पीतल....., कांसा....., लोहा....., एल्युमीनियम.....किलो किसी से ज्यादा नहीं रखुंगा ।'

'मैं नौकर.....नौकरानी.....से ज्यादा नहीं रखूंगा ।'

'मैं गाय.....भैंस.....बैल.....घोड़ा.....से ज्यादा नही रखूंगा ।'

'मैं घी.....मण, तेल.....मण, नमक.....मण/गुण, शक्कर..... मण से ज्यादा नहीं रखूंगा ।'

इन वस्तुओं के अलावा घर में उपयोगी वस्तु रखूंगा ।

आप को जितना रखना हो उतना रख सकते हैं । कोई तकलीफ की

बात ? सरल है न यह अणुव्रत ? परिग्रह की मर्यादा अपेक्षित है । परन्तु आप की दृष्टि 'अपरिग्रह'–धर्म की ओर होनी चाहिए । 'परिग्रह पाप है–' यह बात याद रहनी चाहिए ।

परिग्रह की अनर्थकारिता :

'परिग्रह' नाम का यह ग्रह राहु, केतु और शनि से भी ज्यादा खतरनाक ग्रह है ! इस ग्रह ने तीनों भुवन को अपने प्रभाव से प्रभावित किया है । इस के प्रभाव को नष्ट करने के लिए यह अणुव्रत लेना अति आवश्यक है । हालांकि अणुव्रत से पूर्णतया परिग्रह का प्रभाव नष्ट नहीं होता है, पूर्णतया तो महाव्रत से ही नष्ट होता है । परन्तु प्रारंभ अणुव्रत से करना चाहिए ।

यदि आप आत्मशान्ति.....प्रशमभाव को बनाये रखना चाहते हैं तो आप को परिग्रह कम करना ही होगा । चल-अचल संपत्ति का ममत्व हृदय में भर कर क्या आप शान्ति पाने की आशा रखते हो ? प्रशमभाव बनाए रखने की आशा रखते हो ? परिग्रह का समत्व शान्ति का शत्रु है ! अपरिग्रही मनुष्य ही आत्मशान्ति का अनुभव कर सकता है ।

क्या आप धैर्य....धीरता को जीवन में आवश्यक मानते हो ? यदि आप को परिग्रह प्यारा है तो अधीरता ही रहनेवाली है । परिग्रही मनुष्य कभी धीर नहीं रह सकता है । अधीरता मनुष्य को बिना सोचे-समझे कार्य करवाती है । उस का परिणाम दुःख और संकट होता है । परिग्रह के साथ अधीरता की घनिष्ट दोस्ती है !

परिग्रही मनुष्य पर मोह का साम्राज्य होता है, व्यामोह का वर्चस्व होता है । परिग्रही मनुष्य कभी भी मोहविजेता नहीं बन सकता । परिग्रह विश्रामगृह है मोह का ! ममता...आसक्ति...मूर्च्छा...सभी मोह के ही पर्याय है । धनसंपत्ति, स्नेही-स्वजन...वगैरह का परिग्रह क्या मनुष्य को मोह-भ्रमित नहीं करता है ? करता ही है । परिणाम क्या आता है, जानते हो न ? यहां अशान्ति और परलोक में दुर्गति !

चौथी बात बड़ी गंभीर है । आप लोगों को शायद नहीं जँचेगी । फिर भी बताता हूँ । परिग्रह में से सभी पाप पैदा होते हैं । यानी पापों की जन्मभूमि है परिग्रह । परिग्रह के कारण मनुष्य हिंसा करता है, असत्य बोलता है, चोरी करता है, क्रोध करता है, माया-कपट करता है, अभिमान करता है...ईर्ष्या और निन्दा करता है । और, ये सारे पाप मनुष्य की उन्नति

करते हैं या अवनति ? ये पाप मनुष्य को सुखी बनाते हैं या दुःखी ? सोचो, शान्ति से सोचो। परिग्रह बढ़ाने के लिये दिन-रात दौड़धूप करते हो, परिग्रह बढ़ने पर बहुत खुश होते हो...परन्तु अब थोड़ा सा रूक जाओ और गंभीरता से परिग्रह के परिणामों का विचार करो। विचार करोगे तो परिग्रह की मर्यादा बांधने की इच्छा पैदा होगी। अपरिग्रही बनने की भावना पैदा होगी।

पापों के परिणाम भले आनेवाले जन्मों में भोगने पड़े, परन्तु इस जीवन में आपत्तियां तो आयेंगी ही। परिग्रह के आसपास आपत्तियाँ भटकती रहती हैं। इसलिए तो परिग्रही लोगों को शान्ति से नींद नहीं आती है। नींद में भी भयभीत हो कर जग जाते हैं...चिल्लाते हैं...खड़े हो कर दौड़ने लगते हैं। कभी चोरी हो जाती है, कभी सरकार के अफसर परेशान करते हैं, कभी स्नेही-स्वजन तंग कर देते हैं। कभी मौत भी आ जाती है। परिग्रह की वजह से ये सारी आपत्तियाँ आती हैं, दुनिया में दिखता भी है, परन्तु मोहसक्त जीव परिग्रह की ममता नहीं छोड़ता है–तो इस से बड़ी दुःखदायी बात क्या हो सकती है ?

आपत्ति आयी न हो, आपत्ति आने की कल्पना भी कैसा दुर्ध्यान करवाती है ? परिग्रही मनुष्य प्रायः दुर्ध्यान में ही जीता है। धन-संपत्ति...वगैरह पाने की इच्छा दुर्ध्यान है, उसकी रक्षा के विचार दुर्ध्यान है, चला जाने का भय भी दुर्ध्यान है। और दुर्ध्यान से कैसे पापकर्म बंधते हैं- ये कर्म नरक में ले जा सकते हैं जीवों को। ठीक है, नरक में तो जब जाना होगा तब जायेंगे, इस जीवन में भी दुर्ध्यान से...तीव्र आर्तध्यान और रौद्रध्यान से मन क्षुब्ध बनता है। इस से मानसिक रोग होते हैं और पागलपन भी आ सकता है।

मन की विक्षिप्तता से सारा जीवन व्यवहार बिगड़ जाता है। घर के लोग विमुख हो जाते है। विक्षिप्त मनवाले का घर में, समाज में, नगर में कोई मूल्य नहीं रहता है। जब मनुष्य को लगता है कि 'मेरा घर में...स्नेह-स्वजनों में कोई मूल्य नहीं है', तब वह बहुत दुःखी होता है। धन के भंडार भरे हों, अनाप-सनाप संपत्ति हो, फिर भी परिग्रही मनुष्य दुःखी रहता है। क्या करना ऐसे धनभंडार का ? क्यों ऐसी मूर्च्छा-ममता करना परिग्रह की ? सुखचैन से जीने न दे, वैसे धनभंडार अभिशप्त होते हैं। वैसी धन-दौलत रखने की नहीं होती है।

परिग्रह के इतने ही अनर्थ नहीं हैं, जितना परिग्रह ज्यादा उतना ही अभिमान ज्यादा । अपार धन-संपत्ति हो और अभिमान नहीं हो वैसे तो कोई विरल व्यक्ति ही मिल सकते हैं । हाँ, जो धनवान् अपनी संपत्ति को छिपाये रखना चाहते हैं, वे अभिमान नहीं करते हैं । परन्तु ऐसे लोगों का धन चला जाता है, नष्ट हो जाता है तब वे गहरे शोकसागर में डूब जाते हैं । अरे, सब धन नहीं, थोड़ा धन भी चला जाता है तो वे रोते रहते हैं । शोक-संताप और रूदन का मूख्य कारण यह परिग्रह है । परिग्रह कम करते चलो, यदि है तो । नहीं है परिग्रह, तो उस की कामना-अभिलाषा छोड़ दो।

बहुत बड़े श्रीमंतों को, धनवानों को, परिग्रहियों को देख कर ऐसा मत सोचो कि – 'ये लोग पुण्यशाली हैं, हम कंगाल हैं... ।' परन्तु ऐसा सोचो कि 'ये लोग कितने अशान्त, बेचैन और अधीर हैं...हम सुखी हैं... ।'

और एक महत्व की बात कहता हूँ । जितने झगड़े श्रीमंतों के घरों में होते हैं, उतने दूसरे के घरों में नहीं होते । हाँ, श्रीमंत हो परन्तु ममत्वरहितहो, उस की बात दूसरी है । ममत्व-मूर्च्छा से ग्रस्त मनुष्य की बात है । वे क्लेशों से संतप्त रहते हैं ।

मम्मण सेठ की मिनी आवृत्ति :

धन-संपत्ति की ममता-आसक्ति कैसी भयानक है, यह बात क्या आपको ज्यादा समझाने की आवश्यकता है ? सम्राट श्रेणिक के समय के मम्मण सेठ की कहानी तो आप लोगों ने कई बार सुनी होगी । परिग्रह के कारण, धन-संपत्ति के व्यामोह के कारण वह मर कर नरक में गया ।

अभी अभी जापान की एक घटना पढ़ने में आयी । 'सिगीयूकोयूझु' नाम की एक फेक्टरी का वर्कर (कामदार) ६२ वर्ष की उम्र में मर गया । दूसरे विश्वयुद्ध में यूझु सैनिक था । बाद में वह दक्षिण जापान के 'नोबेका' सिटी में रहता था । एक छोटे से साधारण घर में वह अकेला रहता था । उसने शादी नहीं की थी । वह मर गया, बाद में पुलिस ने जांच की । वह हमेशा अपने घर में ही एक ब्रेड खाता था ! बैंक में उसके २,३०,००० डालर थे और घर में ७०,००० कैश थे, जो कि पेक कवरों में पड़े हुए थे ! वह किसी के साथ ब्रेड नहीं खाता था, चूंकि साथ में खाये तो दूसरों को खिलाना पड़े न ! और, मात्र ब्रेड ही खाता था ! है न मम्मण सेठ की मिनी आवृत्ति !

वैसे बंबई महालक्ष्मी के मंदिर के आगे बहुत भिखारी बैठते है । कुछ वर्ष पहले एक भिखारी मर गया । जिस गंदी गुदड़ी पर वह बैठता था, उस गुदड़ी में से ७५ हजार की करंसी नोट्स निकली थी ! कहिए दुनिया में कैसे परिग्रही लोग होते हैं ! ७५ हजार के नोटों पर बैठकर भीख माँगने में उसको मजा आता होगा !

मेरे पास तीन लाख डालर हैं ! वह रीटायर्ड सैनिक ऐसा ही सोचकर खुश होता होगा न ! न दान दिया, न भोग किया....अंत में वह मर गया.... डालर वैसे ही पड़े रह गये ! परिग्रह की वासना उस जीव को किस गति में ले गयी होगी, कल्पना करना !

सोना, चांदी, घर, दुकान, रूपये, गाड़ी-घोड़े, नौकर....वगैरह बढ़ाने के विचार छोड़ने हैं, घटाने के विचार करने हैं । जंचती है बात ? अंतःकरण की शान्ति....प्रसन्नता पानी है तो बाह्य परिग्रह और आंतरिक आसक्ति का त्याग करना ही होगा । इसलिए यह अणुव्रत बताया गया है ।

पांच अतिचार :

पांचवा अणुव्रत ग्रहण करने के बाद अतिचारों से बचना आवश्यक होता है । पांच प्रकार के अतिचार बताये गये हैं । आज के संदर्भ में अतिचारों को समझना पड़ेगा । अतिचार इस प्रकार हैं —

'क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य सुवर्ण-धनधान्य-दासीदास-कुप्यप्रमाणानिक्रमाः ॥'

पहला अतिचार : खेत, घर, दुकान इत्यादि की जो संख्या नियत की हो, उस से ज्यादा करना और छोटे को बड़ा बनाना ।

दूसरा अतिचार : सोना-चांदी मर्यादा से ज्यादा बढ़ जाने पर पुत्र, भाई, पत्नी वगैरह को देना ।

तीसरा अतिचार : धन-धान्य का जो परिमाण किया हो, उस से ज्यादा रखना ।

चौथा अतिचार : नौकर-नौकरानी एवं पशुओं की संख्या बढ़ जाने पर उसका त्याग नहीं करना ।

पांचवाँ अतिचार : आसन, पलंग, टेबल-कुर्सी....आदि घरेलू सामान की मर्यादा से बढ़ जाने पर उसका त्याग नहीं करना ।

भावोल्लास घटने से अतिचार :

इस प्रकार के अतिचार लगने का कारण होता है भावोल्लास का घटना ।

व्रत ग्रहण करते समय, साधुपुरूष के उपदेश से भावोल्लास बढ़ते हैं। बढ़ते हुए भाव के समय मनुष्य व्रत-प्रतिज्ञा ले लेता है। बाद में जब भावोल्लास घटता है तब व्रत का अतिक्रमण करने के लिये तत्पर हो जाता है। पाप का भय होने से, व्रतभंग करने से हिचकिचाता है, परन्तु व्रतभंग न हो, और इच्छा पूर्ण हो, वैसा मार्ग निकालता है और व्रत को दूषित करता है। कैसे करता है, यह कुछ उदाहरणों से समझाता हूँ।

किसी ने एक खेत और एक घर का परिग्रह परिमाण किया। भाव गिरने पर उसकी इच्छा दो खेत और दो घर रखने की हुई। यदि ऐसा करता है तो व्रतभंग ही होता है। वह व्रतभंग करना नहीं चाहता है। व्रत बनाये रखना है और इच्छापूर्ति भी करना है। वह अक्लमंदी से काम करता है। जो उसका खेत हो, उसके पासवाला खेत ले लेता है और बीच में से बाड़ (बाउन्ड्रीवाल) निकाल देता है। दो खेत का एक खेत बना देता है। व्रतभंग होता नहीं है और खेत बढ़ाने की इच्छा पूर्ण हो जाती है। परन्तु अतिचार तो लग ही जाता है।

वैसे घर के पास दूसरा घर लेता है, बीच में से भित्ती निकाल देता है....दो घर को एक बड़ा घर बना देता है। व्रतभंग होता नहीं और घर बढ़ाने की इच्छा पूर्ण हो जाता है। परन्तु अतिचार लगता ही है।

वैसे, किसी अणुव्रतधारी ने 'मुझे एक हजार ग्राम सोना ही रखना है।' इस प्रकार परिग्रह परिमाण किया। बाद में ससुराल से या दूसरी जगह से ज्यादा सोना आ गया। रखने की इच्छा हो गई। यदि रखता है तो व्रतभंग होता है। वह सोच कर उपाय ढूंढ निकालता हैं। वह सोना दूसरे किसी मित्र को सौंपता है। अपने मन में सोचता है कि : 'मेरा परिग्रह परिमाण व्रत चार महीने का है अथवा सात महीने का है, बाद में मैं मित्र से सोना वापस ले लूंगा।' मन में उसने उस सोने को अपना मान लिया, इस अपेक्षा से व्रतभंग होता है, परन्तु व्रत सापेक्ष रहते हुए उसने अपने पास सोना नहीं रखा, इसलिए व्रतभंग नहीं होता है। इस प्रकार भंगाभंग रूप अतिचार लगता है।

इसी प्रकार व्रतधारी ने धन-धान्य का प्रमाण निश्चित कर दिया हो, और बाद में बढ़ गया धन-धान्य ! त्याग नहीं करना है, रखने की इच्छा हो गई ! व्रतभंग धन-धान्य देनेवाले को कहता है : 'चार महीने के बाद मेरे

घर में जो धन-धान्य है वह बिक जायेगा, इस के बाद, आप जो देनेवाले हो वह धन-धान्य ले जाऊंगा ।' इस प्रकार चार महीने के बाद लेने का बंधन स्वीकार कर लेता है । उसका व्रत चार महीने का है, इसलिए व्रतभंग नहीं होता है, परन्तु मन से उसने ले लिया और लेने का वादा कर दिया, इसलिए अतिचार लगता है । व्रतसापेक्षता की वजह से व्रतभंग नहीं माना गया है ।

दास-दासी और पशु-पक्षी को लेकर व्रत लिया है कि 'इतने ही दास-दासी और पशु-गाय-भैस रखूंगा ।' यह मर्यादा मान लो कि चार महीने की बांधी है, अब उसी मर्यादाकाल में गर्भाधान का विचार करता है तो अतिचार लगता है । उस अवधिकाल में दासी पुत्र-पुत्री को जन्म देती है, गाय बछड़े को जन्म देती है....तो संख्या बढ़ जाती है, संख्या बढ़ने से व्रतभंग होता है ! इस दृष्टि से वह इस प्रकार गर्भाधान करवाता है कि व्रत की अवधि के बाद ही वे द्विपद या चतुष्पद जीव जन्म दे सकें । परन्तु जीव गर्भ में आने से, निर्धारित संख्या से संख्या बढ़ जाती है....बस, मात्र जन्म नहीं होता है, इतना ही ! व्रतसापेक्षता के कारण अतिचार लगता है ।

'कुप्यम्' में भी पर्यायान्तर करने से अतिचार लगता है । गृहोपयोगी आसन, पलंग, बरतन वगैरह का जो परिमाण किया हो, उसकी संख्या बढ़ने न पाये इसलिए दो आसन का एक आसन कर दे ! दो थाली का एक बड़ी थाली बना दे । 'मैंने संख्या की मर्यादा की है....वस्तु को छोटी-बड़ी तो कर सकता हूं । इस प्रकार व्रतसापेक्ष रह कर वस्तु का पर्याय-अवस्था बदलता है इसलिए अतिचार कहा जाता है ।

अथवा बरतनवाले को बोल देवे कि 'चार महिने के बाद मैं ये बरतन ले जाऊंगा, और किसी को मत देना ।' इस प्रकार वह रखता नहीं है, परन्तु रखवाता है । इसलिए व्रतभंग नहीं होता, परन्तु अतिचार लगता है ।

लेकिन ये सारे अतिचार तो तभी संभव हैं कि जब अणुव्रत कुछ महिने के लिये या कुछ वर्ष के लिये लिया हो ! आजीवन अणुव्रत लिया हो तो ? ज्यादातर व्रतभंग की ही संभावना रहती है ! हाँ, दृढ़ता के साथ मर्यादापालन करे, तब तो अच्छी तरह व्रतपालन हो सकता है । परन्तु अध्यवसायों की चंचलता अच्छी तरह व्रतपालन करने नहीं देती है । यदि मन चंचल हो तो 'परिग्रह परिमाण' व्रत कुछ महीने या कुछ वर्ष के लिये लेते रहना चाहिए ।

स्थूल परिग्रह नौ प्रकार का :

इस प्रकार संक्षेप में पांच अतिचार बताये । अब स्थूल रूप से परिग्रह के जो नौ प्रकार बताये हैं–वह बताता हूं ।

१. धन, २. धान्य, ३. क्षेत्र, ४. वास्तु, ५. चांदी, ६. सोना, ७. चतुष्पद प्राणी, ८. द्विपद जीव और ९. कुप्य ।

पांच अतिचारों में इन नव वस्तुओं का समावेश हो ही जाता है । दूसरे व्रतों के अतिचार भी पांच-पांच बताये गये हैं इसलिए इस व्रत के भी पांच अतिचार बताये हैं ।

परिग्रह परिमाण का प्रयोजन :

अतिचारों से तभी बच सकोगे जब व्रतों का महत्व, व्रतों का प्रयोजन समझोगे । 'कम से कम आवश्यकता'– जीवन का यह सूत्र होगा तो 'परिग्रह परिमाण' लेने में मजा आएगा । और, बाह्म परिग्रह के साथ आतंर परिग्रह को कम करने का सदैव खयाल रखना चाहिए । आंतर परिग्रह है मूर्च्छा और ममत्व, आसक्ति और अनुरक्ति । आंतर परिग्रह से मुक्ति पाने के लिये बाह्म परिग्रह का परिमाण करना आवश्यक है ।

ज्ञानी पुरूषों ने कहा है कि ममत्व का भार, संभी प्रकार के भारों से ज्यादा है । ममत्व ही परिग्रह है । 'मुर्च्छा' परिग्गहो वुत्तो ।' ऐसा श्री जिनवचन है । एक वस्तु का भी ममत्व जीव को डुबो देता है । भारी वस्तु जल्दी डूबती है । हल्की वस्तु ऊपर जाती है । ऊपर जाना है तो भार कम करना ही पड़ेगा । ममत्व का भार कम करना पड़ेगा । ममत्व से थोड़ा सा भी मुक्त जीव उर्ध्वगति–देवगति पाता है । संपूर्णतया ममत्व से मुक्त बनते ही जीवात्मा वीतराग बन, मोक्ष पा लेता है ।

जो चक्रवर्ती राजा राज्य का त्याग कर साधु बनता है, वह देवगति या मोक्ष पाता है और जो राज्य का त्याग नहीं करता है, राज्य के ममत्व के साथ मरता है तो नरक में जाता है । इस बात से आप समझ सकते हैं कि आंतर परिग्रह की क्या शक्ति है । परिग्रह परिमाण व्रत का प्रयोजन यही है : आंतर परिग्रह से मुक्त होकर उर्ध्वगति प्राप्त करना ।

क्रमशः

राजा सम्प्रति

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

परिवर्तन

समय अपना काम किये जाता है। वह किसी के लिए रूकना नहीं जानता। आज घटित होनेवाली चाहे जैसी हृदय-विदारक घटना भी दिन बीतने पर विस्मृति उस घावको सुखा देती है, और इस प्रकार क्रमशः वह ताजी घटना स्मृतिपट परसे लुप्त हो जाती है। अवन्ति की घटना के पश्चात् कुछ समय बीत गया। इस बीच और भी अनेक घटनाएँ घटित हो गई। युवराज कुणाल अब युवराज नहीं था। उसका अवन्ती का वह वैभव विलास एवं आनन्दमय जीवन अब वैसा ही नहीं रह गया था। आज तो वह अन्धा कुणाल राज्यकी ओरसे मिले हुए अपने ग्राम में रहकर जीवन बिता रहा था। जगत्की स्वार्थपरायणता तो देखिए ! स्वार्थान्ध दुनिया उदय होनेवाले को ही पूजती है, अस्त होने वाले को नहीं। जिस युवराजका किसी समय दिन दूना सम्मान हो रहा था, वही अब उन सबसे वञ्चित हो रहा है। वह अन्धा कुणाल कहाँ पड़ा है ? इसका भी किसीको पता नहीं है। जिस पिताको वह प्राणाधिक प्रिय प्रतीत होता था, उसके हृदय में से भी वह स्नेहभाव धीरे-धीरे कम होने लगा। समय की यही विचित्रता है। फिर भी कुणाल के मन में इसके लिए कोई हर्ष या शोक नहीं था। पिताके दिये हुए ग्राम में रह कर अत्यन्त सादगी से प्रभु-भजनमें वह अपना समय व्यतीत कर रहा था। उसके साथ पुत्रवत् स्नेहवाली धायमाता सुनन्दा एवं अन्य दो-चार दास-दासियाँ रहती थीं। पूर्ण शान्तिमय जीवन व्यतीत करनेवाले कुणालका समय प्रभु-भक्ति में ही व्यतीत होता था। फिर भी उसकी धायमाताको उसकी दशापर बहुत दुःख होता था। इसी पश्चात्तापके मारे वह सूखकर आधी रह गई थी, किन्तु अब तो अन्य कोई उपाय ही नहीं था। अवन्तिका

छोड़ते समय तो उसके दुःखकी परिसीमाही हो गई थी, किन्तु दैव गतिके सम्मुख वह लाचार थी।

"महाराज के पत्रसे इतना तो स्पष्ट होगया था कि, उन्होंने कुमार को अन्धा करने के लिए आज्ञा नहीं दी थी, वरन् वे चाहते थे कि अब कुणाल अध्ययन करे-पढ़ें, क्योंकि वही उनकी समस्त आशाओंका आधार रूप था, किन्तु 'अधीयऊ'के बदले अन्धीयऊ' उनके हाथसे कैसे लिखा गया, यह समझमें नहीं आ रहा था। फिर भी उसने पिताकी इस आज्ञा का पालन कर उन्हें जीवित ही मार दिया और मेरी उस आशा पर पानी फेर दिया।' इस प्रकार सम्राट-अत्यन्त दुःखी हुए और उन्होंने रूदन करते हुए हृदयसे कुणाल को एक समृद्धिवाला ग्राम प्रदान कर सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करनेका प्रबन्ध कर दिया। किन्तु धायमाता सुनन्दा को इस बातपर दुःख हो रहा था कि,—'युवराज ने धीरज न रखकर जल्दीसे पत्रमें लिखी बातका पालन कर दिखाया ! अन्यथा दुबारा पाटलीपुत्रसे पत्रका उत्तर मँगवाया होता तो सब बातोंका खुलासा हो जाता। साथ ही उस पत्रमें उसे सौतेली माताके षड़यन्त्रकी गन्ध आ रही थी। चाहे जिस रानीने राजाको शस्त्र बनाकर यह कार्य साधा है। आज उसका मनोरथ पूर्ण हो गया है, किन्तु मेरे और कुणाल की स्वर्गीय माताके मनोरथ पर पानी फेर दिया है।' इन्हीं सब विचारों से वह दुःखित होकर रो पड़ी। यह रूदन तो उसके लिए अब सदैव का हो गया था, क्योंकि दुःखके समय स्त्री के लिए रोना ही एक सबसे बड़ी शक्ति है। अरे ! 'स्त्रियोंकी तो बात ही क्या, किन्तु दुःखके समय क्या समर्थ पुरूष भी बालककी तरह नहीं रोने लग जाते ?'

साठ हजार पुत्रों के भस्म कर दिये जानेके समाचार जब दूसरे सगर-चक्रवर्तीने सुने :– तब उनका हृदय विदीर्ण होने लगा, किन्तु उस समय किसी को रोना नहीं आता था, इसलिए शक्रेन्द्र ने देखा कि सगरका हृदय फट जायगा, अतः उसने ढाड़ मारकर रोना आरम्भ कर दिया। उसका अनुकरण कर दूसरा चक्रवर्ती भी पुत्रों के दुःखसे ढाड़ मारकर रोने लगा, और इस प्रकार उसने अपने हृदय का आवेग हल्का किया।

बेचारी सुनन्दा रो-रोकर आधी हो गई थी। एक दिन उसे रोती हुई देखकर कुणाल ने कहा :– "माता ! तू क्यों रूदन करती है ? इस प्रकार

रो-रोकर तू दूसरों को भी दुःखी करती है !"

"अरे बेटा ! तूने तो हमें जीतेजी ही मार डाला । तेरी स्वर्गीया माताके मनोरथ और मेरे मनोरथ को तूने व्यर्थ करके अपनी सौतेली माता का मनोरथ पूर्णकर दिया । हाय ! यह सब मैं कैसे देख सकूँगी ?" इस प्रकार सिसकती हुई सुनन्दाने कहा ।

"किन्तु अब क्या हो सकता है ? होनहार कभी टल नहीं सकती । जो होनेवाला है, यह तो होकर ही रहता है । अपना सोचा हुआ कैसे घटित हो सकता है ?" कुणालने समझाया ।

"हाय ! आज मेरे हाथ नीचे होगये । देखो, वह तुम्हारी अवन्ती नगरी और जिस महलमें तुम खेलते और बालक्रीड़ा करते थे, तथा जिस समृद्धि-वैभवका उपभोग करते थे, उसे आज महेन्द्र भोग रहा है । वह किस प्रकार आनन्द और सुखपूर्वक जीवन बिता रहा है ?"

"इससे क्या हुआ ? महेन्द्र भी आखिर मेरा भाई ही तो है ? अवन्ती किसी शत्रुके तो हाथ में नहीं चली गई कि जिससे तू दुःखित हो रही है ? हम दोनों एक ही पिताके पुत्र हैं । उसे सुखी देखकर मैं भी सुखी हो सकूँगा ।"

"बैटा ! राजा की जरासी भूल का कितना भयङ्कर परिणाम हो गया ! और फिर तुमने तो जरा भी धैर्य नहीं रखा ! नहीं तो ऐसा भयङ्कर परिणाम कभी न होता !"

"किन्तु जैसा मेरे भाग्य में था, वही हुआ ! इसमें उनका क्या दोष ? पुत्र के रूपमें मेरा यही कर्त्तव्य था कि पिताकी आज्ञा कैसी भी क्यों न हो, उसका पालन करना ही मेरे लिये उचित ही था !"

"यह तो ठीक है ! किन्तु मुझे तो केवल इसी बातका दुःख है कि पिताकी आज्ञाका पालन करते हुए तू सौतेली माता के षड़यन्त्र का शिकार हो गया !"

"इसमें षड़यन्त्र क्या हो सकता है ? तुम स्त्रियों को तो हर बातमें सन्देह हो जाता है ।"

"पुत्र ! तू इस रहस्यको नहीं समझ सकता । वह सब तो मैं पता लगाऊँगी कि यह काला कर्म किस शंखिनीका है ? तभी तू जान सकेगा कि

तेरी सौतेली माताने कैसा भयङ्कर पाप-कार्य किया है ?"

"माता, तू तो व्यर्थ की शङ्का करती है ? क्या मैं अपनी सौतेली माँ का शत्रु था कि, जिसके कारण उसे ऐसा कर्म करना पड़ा ? यह तो पिताजी के हाथों प्रमादवश भूल हुई है ! किन्तु अब उससे प्रयोजन ही क्या है ? कितना ही क्यों न करें, फिर भी नयी आँखे तो अब नहीं आ सकतीं !"

"पुत्र ! तुझे अवन्तीमें रखनेका कारण ज्ञात है ? तेरी माताकी मृत्युके पश्चात् महाराजने तुरन्त ही तुझे युवराज-पद प्रदानकर बाल्यावस्थासे ही अवन्ती क्यों भेज दिया था ?"

"मुझे किसलिए अवन्ती भेज दिया था, इसे तो तू ही बतला सकती है !" कुणालने कहा ।"

"तेरी सौतेली माताएँ नहीं चाहती थीं कि तू राज्यका उत्तराधिकारी बने। उनमें भी तिष्यरक्षिता तेरे प्रति विशेष निर्दयी थी, क्योंकि तेरे युवराजपदके कारण उसके महेन्द्र का साम्राज्याधिपति बननेका अधिकार छिन गया था । भला, ऐसी कौन माता होगी जो कि अपने पुत्रका भला न चाहती होगी ?"

"तो उस सौतेली माताके सङ्कटसे बचाने के लिए ही पिताने मुझे अवन्ती भेज दिया था, यही बात है न ?" सुनन्दा के कथनकी पूर्ति करते हुए कुणालने कहा ।

"हाँ, उन विषमयी नागिनोंका विष तुझे स्पर्श न कर सके और तू सुरक्षित एवं सुखपूर्वक रह सके, इसीलिए विश्वस्त व्यक्तियोंके साथ तुझे अवन्तीमें रखा गया था, किन्तु दूर रहते हुए भी तेरी अपर माताओंने तो अपना मनोरथ सफल कर ही लिया !"

"किन्तु इस प्रकार सन्देह करके किसी पर दोषारोपण नहीं किया जाता, माँ !"

"इसलिए तो मैं सत्य वस्तुका पता लगाकर उनके मनोरथ को विफल करनेका प्रयत्न करूँगी !"

"अरी ! तू क्यों व्यर्थ इस प्रकारकी उलटी बातें कर रही है ? भला, तू उनका मनोरथ कैसे व्यर्थ कर सकती है ? क्या तू फिरसे मुझे नयी आँखें प्राप्त करा सकती है ?" इस प्रकार मुसकुराते हुए कुणालने सुनन्दा को शान्त

करने का प्रयत्न किया !

"पुत्र ! यह तो मनुष्य की शक्ति से बाहर की बात है ! इस समय तो मैं जीते हुए भी मृतक के समान हूँ, किन्तु यह कृत्य किसका है, इस बातका तो पता अवश्य लगाऊँगी !"

"जो तुझे ठीक जान पड़े, सो करते रहना, किन्तु व्यर्थके लिए रोती क्यों है ?"

कुणालने यद्यपि सुनन्दाको बहुत कुछ आश्वासन दिया, फिर भी स्त्रियोंका हृदय तो माया-ममतासे परिपूर्ण होता ही है। विशेषकर स्त्रियोंको ही संसारके माया-मोंह और वैभव अधिक प्रिय होते हैं। अतः जिस प्रकार उन्हें इनके समागमसे हर्ष होता है, उसी प्रकार, प्राप्त उच्चस्थितिसे एकदम नीचे गिर जानेपर विषादकी छाया भी उनपर पड़े बिना नहीं रहती, किन्तु कुणालके मनमें तो अवन्तीका राज्य-वैभव और आजकी स्थिति, दोनोंही समान थीं। इस समय उसमें धीरता, गम्भीरता और विवेक-भावकी ही प्रधानता हो रही थी, कुमारावस्थाकी चञ्चलता नामको भी नहीं थी। उसे केवल जीवित ही नहीं रहना था, वरन् पितृभक्तिही उसका जीवन था। जिस प्रकार हरिश्चन्द्र के लिए 'सत्य' ही जीवन था। रामके लिए पितृभक्तिही जीवन था। अथवा भक्तके लिए प्रभूभक्ति ही जीवनमन्त्र होता है। सती नारीके लिए पतिभक्ति ही जीवन होता है। दयाके सागरके लिए अहिंसा ही जीवन का व्रत होता है। तपस्वियों के लिए उनका व्रत ही जीवनरूप होता है और जिसका यह जीवन अखण्डित है, वही संसारमें जीवित है। अन्यथा यों तो जगत्में अनेक माता-पिता पुत्रोंको जन्म देते हैं, किन्तु उससे क्या ?

किन्तु सुनन्दा के दुःख की तो सीमा ही नहीं थी। उसके मतानुसार तो यह सब परिवर्तन जिस व्यक्तिने राजा को शस्त्र बनाकर करवाया था, उससे इस वैर या शत्रुताका प्रतिशोध करना ही अभीष्ट था और इसीके लिए उसने निश्चय कर लिया था।

हम यह तो जानही चुके हैं कि राजा के साथ तिष्यरक्षिता ने भी कुणालके लिए शोक प्रकट करनेके बहाने पूरा प्रयत्न कर अपने हृदयका उभार निकाल दिया था। थोड़े दिन बीत जानेपर महाराजने कुणाल को

एक बहुत अच्छा भरा-पूरा गाँव जागीर में देकर उसके लिए सब प्रकारसे उचित प्रबन्ध कर दिया। कुणालके पश्चात् राज्यका उत्तराधिकारी महेन्द्र ही था। अतएव उसे युवराज बनाकर अवन्ती प्रदान करनेका विचार किया और इसके लिए उन्होंने तिष्यरक्षितासे सलाह माँगी।

यद्यपि तिष्यरक्षिताने पहले तो उदासीनता-ही बतलाई, किन्तु बादमें प्रसन्न होते हुए भी ऐसा भाव प्रकट किया मानों अत्यन्त दुःखित होकर वह अनुमति दे रही है। इस प्रकार थोड़े ही दिनों में महेन्द्र राजकुमार न रहकर युवराज बनगया और इसके बाद वह राज्य के उत्तराधिकारी के रूपमें अपने मन्त्रियों तथा विश्वासी जनोंके साथ मालव-प्रदेश की ओर विदा होगया।

तिष्यरक्षिताके हृदयमें अब हर्ष की कोई सीमा नहीं रह गई थी। जो शूल बहुत समयसे उसके हृदयमें चुभ रहा था, वह उसकी युक्ति से निकल गया और उसका पुत्र युवराज-पद प्राप्त कर चुका था। वह भावी भारत के साम्राज्यका मुकुटधारी बन गया था। अवन्ती जाते समय उसने पुत्रको अनेक प्रकारसे सिखावन दी और हर्षाश्रुके साथ विदा किया। अपने विश्वस्त दास-दासियोंके साथ श्यामा को भी उसने महेन्द्र की रक्षा के लिए साथमें अवन्ती भेजा। इस प्रकार कुणाल के स्थान पर आज महेन्द्र अवन्तीमें मन-माना बैभव भोगता हुआ सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत कर रहा था। चपल लक्ष्मीकी चञ्चलता तो देखिये कि इस संसार में वह किस चालाकी से राजाको रङ्क बना देती है। फिर भी आश्चर्य तो यही है कि महान समर्थ आत्मा सत्य वस्तु को छोड़कर उसके पीछे पागल बनते हुए अनेक प्रकारके कष्ट भोगता है।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English			
1.	*Bhagavati-sütra* – Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;		
	Vol-I (śatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol-II (śatakas 3-6)		150.00
	Vol-III (śatakas 7-8)		150.00
	Vol-IV (śatakas 9-11)		150.00
2.	James Burges – *The Temples of Śatruńjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates [It is the glorification of the sacred mountain *Śatruńjaya.*]	Price : Rs.	100.00
3.	P.C. Samsukha – *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	10.00
4.	Ganesh Lawani – *Thus Sayeth Our Lord*		10.00
Hindi			
5.	Ganesh Lalwani – Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani		40.00
6.	Ganesh Lalwani.– Śraman Samskriti ki Kavitä		20.00
7.	Ganesh Lalwani – Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani		30.00
8.	Ganesh Lalwani – Candana-Mürti, translated by Ṣhrimati Rajkumari Begani		50.00
9.	Ganesh Lalwani – Vardhamän Mahavír		60.00
10.	Ganesh Lalwani – Barsät kí Ek Rät		45.00
11.	Ganesh Lalwani – Pańcadaśí		100.00
12.	Rajkumari Begani – Yädó ke Äine më		30.00
Bengali			
13.	Ganesh Lalwani – Atimukta		40.00
14.	Ganesh Lalwani – Śraman Samskrti Kavitä		20.00
15.	Puran Chand Shyamsukha – Bhagaván Mahävír O Jaina Dharma		15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से
सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक)
के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

One of its Kind, most Valuable,
Quarterly research Journal
on Jainism

Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के
गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के
आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये
वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।
Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

卐

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR & FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।

Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से
पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College
of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

卐

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

WB/NC - 330
VOL XXII No. 2

'Titth ayara'
Registered with the registered
of Newspapers for India under
No. R.N. 3018/77

May 1998

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों
के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा
के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225